समकालीन कविता

चुनौतियाँ और संभावनाएँ

संपादक:

अरुण होता

समकालीन कविता : चुनौतियाँ और संभावनाएँ

संपादक:

अरुण होता

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जुलाई, 2023

© अरुण होता

अनुक्रम

भूमिका 5

पश्चिम के आतंक से मुक्ति का संघर्ष 9

केदारनाथ सिंह

समकालीन हिंदी कविता : नई चुनौतियाँ 24

जितेन्द्र श्रीवास्तव

समकालीन कविता : चुनौतियाँ और संभावनाएँ 36

मनीषा झा

समकालीन साहित्य और समस्याएं 46

जीतेन्द्र गुप्ता

समकालीन कविता : चुनौतियाँ और संभावनाएँ (संदर्भ : केदारनाथ सिंह की कविता) 71

हृषिकेश कुमार सिंह

समकालीन कविता में दलित चेतना 85

विजय कुमार भारती

समकालीन दलित कविता में प्रतिरोध का स्वर 101

विनोद कुमार

समकालीन आदिवासी कविता : संभावनाएँ और चुनौतियाँ 114

मेरी हाँसदा

हाशिए से बेदखली के विरोध में नगाड़े की तरह बजते शब्द 128

अल्पना नायक

समकालीन परिदृश्य में आदिवासी कविता 140

धनंजय कुमार साव

समकालीन कविता में मज़दूर और किसान 155

रचना पांडेय

गरीबी से नहीं, अपमान से डर लगता है... 168

रीता दास

समकालीन हिन्दी कविता में स्त्री 177

प्रतिभा प्रसाद

समकालीन कविता में स्त्री का वृत्तांत 183

श्वेता वर्णवाल

समकालीन कविता में समाज व परिवेश 192

रेशमी पांडा मुखर्जी

समकालीन कविता की संघर्षशीलता 203

रमेश यादव

समकालीन कविता में बदलते मूल्यों की चिंता 208

सुलोचना दास

समकालीन हिन्दी कविता में लोक (संदर्भः केदारनाथ सिंह, राजेश जोशी, और जितेन्द्र श्रीवास्तव) 230

मृत्युंजय पाण्डेय

भूमण्डलीकरण और समकालीन कविता 261

मीरा साव

समकालीन कविता में मानव संसक्ति 268

शगुफ़्ता यास्मीन

समकालीनता और धूमिल 277

श्रीपर्णा तरफदार

बहुधर्मी कवि केदारनाथ सिंह 288

अभिजीत सिंह

पंकज सिंह की कविता : सोच के नये आयाम 300

मकेश्वर रजक

बद्रीनारायण के काव्य-जगत की समकालीनता 312

बीरेन्द्र सिंह

अनामिका का काव्य : स्त्री विद्रोह का आख्यान 327

प्रियंका कुमारी सिंह

भूमिका

कविता पाठक को उद्वेलित करनेवाली अभिव्यक्ति है। इस अभिव्यक्ति से गुज़र कर अथवा उसका साक्षात्कार करने के पश्चात् पाठक आनंदित हो सकता है तो क्षुब्ध भी। हो सकता है कि उसमें प्रेम के भाव जाग्रत हों अथवा क्रोध के। उसमें क्रांति की भावना उत्पन्न हो सकती है अथवा शांत दशा की। आशय यह कि जिस अभिव्यक्ति में पाठक के हृदय में भाव उद्वेलन की सामर्थ्य होती है वह सार्थक होती है। कवि कर्म भी सार्थक माना जाता है। बहरहाल, इस कविता विरोधी समय में कविता पर बातें करना अपने आप में महत्त्वपूर्ण है। दशकों से 'कविता की मौत' की उद्घोषणा बार-बार दुहराई जा रही है। बावजूद इसके, कविताएँ लिखी जा रही हैं। ख़ूब लिखी जा रही हैं। यह कविता की प्रतिरोधी प्रवृत्ति है। कविता ही नहीं साहित्य की प्रत्येक विधा मानवताविरोधी ताक़तों को चुनौती देती है। मानवता का पक्ष लेती है। मनुष्यता को सर्वोच्च स्थान प्रदान करती है।

कविता समय और समाज की उपज होती है। समय और समाज के यथार्थ को कविता संवेदनात्मक धरातल पर अंकित करती है। समकालीन हिंदी कविता समय के अंतर्विरोधों, विसंगतियों तथा सच्चाइयों को शिद्दत के साथ प्रस्तुत करने में सदा सक्षम

है। ख़ुशी की बात है कि समकालीन कविता में पांच पीढ़ी के कवि आज सृजनरत हैं। पहली पीढ़ी में कुँवर नारायण, केदारनाथ सिंह, नरेश सक्सेना आदि वरिष्ठतम कवि हैं तो दूसरी पीढ़ी में आलोक धन्वा, राजेश जोशी जैसे वरिष्ठ कवि आते हैं। अरुण कमल, एकांत श्रीवास्तव, बद्रीनारायण, मदन कश्यप, हरीशचंद्र पांडेय, पवन करण, जितेंद्र श्रीवास्तव, श्रीप्रकाश शुक्ल, कात्यायिनी, अनामिका, नीलेश रघुवंशी, निर्मला पुतुल आदि तीसरी-चौथी पीढ़ी में सक्रिय हैं तो एक युवतर पीढ़ी के कवि सुरेश सेन 'निशांत', बहादुर पटेल, उमाशंकर चौधरी, ज्योति चावला, कुमार अनुपम, अशोक कुमार पांडेय, प्रांजल धर आदि तमाम नाम कविता के संसार को विविधताओं से परिपूर्ण कर रहे हैं। समकालीन कविता ने निश्चित तौर पर हिंदी कविता को समृद्ध तथा बहुरंगी बनाया है।

साठोत्तरी हिंदी कविता में मोहभंग का स्वर प्रबल रहा तो आज की कविता में प्रतिरोध और पक्षधरता की काव्यात्मक अभिव्यक्ति हुई है। यह कविता अपने समय और समाज की ख़ामोशी को दर्ज करनेवाली कविता है। प्रतिकूल समय और संकटों से घिरे मनुष्य की त्रासदियों को अंकित करनेवाली कविता का नाम समकालीन कविता है। सूचना-प्रौद्योगिकी, भूमंडलीकरण, उदारीकरण, निजीकरण, मीडिया, बाज़ार, धर्म, पूँजी और बाहुबल पर आधारित राजनीति, पर्यावरण संकट, नारी-दलित-आदिवासी चिंता, सांप्रदायिकता, भ्रष्टाचार, अपराधीकरण की राजनीति, राजनीति का